Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- VI ISSUE-XII DECEMBER 2019 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 5.707 ISSN 2349-638x

मुगलकालीन शिक्षा नीति का सामाजिक मूल्यांकन

सैय्यद मुजाहिद सैय्यद बासित
संशोधक विद्यार्थी इतिहास विभाग
डॉ. कविता आर.तातेड
इतिहास विभागाध्यक्ष,
लो.ना.बा. अणे महिला महा. यवतमाल

किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति शिक्षा पद्धती के स्तरपर निर्भर करती है। यदि उचित शिक्षा की व्यवस्था जनसाधारण के लिए होगी तो जनता का सुसंस्कृत होना स्वाभाविक ही है। मुगल काल मे शिक्षा का स्वरूप धार्मिक था जिसका प्रभाव तत्कालीन समाज पर भी दिखाई देता है। इस युग में शिक्षा का मुख्य उद्देश प्रत्येक मुसलमान को शिक्षा प्रदन करना इस्लाम का प्रचार करना, भौतिक सुख प्राप्तकरना तथा राजनीतिक वर्चस्व को बनाये रखन था।

मुगलकाल में हिन्दु एवं मुस्लीम शिक्षा नीति मे पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है। डॉ. युसूफ हुसैन के अनुसार मध्ययुगमें लोगों के सोचने तथा अभिव्यक्ति का दृष्टिकोण मजहबी था। राजनीति दर्शन और शिक्षा महजबी नियंत्रण में थे और उन्हे महजबी परिभाषाओं के अनुकूल बना लिया था। अत: इस्लामी शिक्षा केन्द्रो का मुख्य उद्देश इस्लाम का प्रचार करना व उन्हें सुदृढ बनाना था। मुगल काल में हिन्दु शिक्षा संस्थानों को आक्रमणकारियोद्वारा क्षति पहुँचाये जाने से हिन्दुओं के प्राचीन शिक्षा केंद्र लगभग नष्ट हो चुके थे।

१) शिक्षा का स्वरूप :

इस समय भारत में आये विदेशी यात्रीयों के विवरणों से मुगलकालीन प्राथमिक शिक्षा की जानकारी मिलती है। प्राथमिक शिक्षा के केन्द्र मकतब कलहाते थे जिनमें बच्चो को प्रारंभ से कुरान पढाया जाता था। जिस से उन्हे इस्लाम के सिद्धांतो की जानकारी प्राप्त हो सके। जनसाधारण के बच्चे इन मकतबो में शिक्षा प्राप्त करते थे जबकि उच्चवर्गीय, राजपरिवार के बच्चों के लिए अलग से अध्यापक की नियुक्ती कर शिक्षा दिलाई जाती थी। इसके अतिरिक्त खानकाह, दहगाह में भी शिक्षा दी जाती थी। प्रारंभिक शिक्षा सामन्यत: ५—६ वर्ष की उम्र में बिस्मिल्लाह की रस्म से प्रारंभ की जाती थी। मकतब में प्रारंभिक भाषा परिचय के साथ विद्यार्थी को पाठांतर के माध्यम से कुरान कंठस्थ कराया जाता था। अर्थात कुरान के अध्ययन के पश्चात गुलीस्तान एवं फिरदौसी के काव्यों को पढाया जाता था।

मुगल काल में उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्र मदरसे होते थे। इनमें व्याख्यानों के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी। मदरसों में अध्यापकों की नियुक्ति सरकारद्वारा की जाती थी। मदरसों का संचालन सरकार तथा अमीर लोगों द्वारा प्राप्त अनुदान से किया जाता था। इस युग में हिंदु शिक्षण संस्थाओं में पाठशाला, विद्यालय एवं गुरूशाला का प्रचलन था। पाठशाला में प्रारंभिक शिक्षा तथा गुरूशालाएँ साहित्य की शिक्षा देती थी। प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था संपूर्ण देश में थी किन्तु उच्च शिक्षा की व्यवस्था प्रमुख शहरों में ही दिखाई देती है जिनमें आगरा, दिल्ली, जौनपूर, लाहौर, फतेहपूर, सीकरी, अंबाला, सियालकोट, ग्वालियर आदिका उल्लेख मिलताहै। इस युग में अध्यापक को उचित सन्मान दिया जाता था। जोअध्यापक ग्रंथ की सहायता के बिना पढाते थे उनकी विद्वत्ता को सम्मानितकिया जाता था। बदायूनी के अनुसार शेख अब्दुल्लाह नामक शिक्षक को किसी भी समस्यापूर्ती के लिए पुस्तक को उपयोग करने की आवश्यकता नही होती थी क्योंकी उन्हें एक बार वे पठन से समस्त पुस्तक याद हो जाती थी। मध्ययुगीन मुगल शासकोने साम्राज्य विस्तार के साथ सांस्कृतिक सामाजिक परंपराओंकी एक मिली जुली संस्कृति का विकास किया। मुगल शासकों ने भारतीय समाज में हिन्दु मुस्लीम समाज की विभिन्नता को कायम करते हुए भी साहित्य, कला के क्षेत्र में समन्वयता को बढावा दिया। अकबर ने मुगल राज्य को सुदृढ बनाने के लिए एक पंथनिरपेक्ष विचारधारा को अपनाया जिसका सर्वोत्कृष्ट रूप सुलहेकुल के रूपमें दिखाई देता है। अत: औरंगजेब के साम्राज्य को छोडकर अन्य मुगल शासकों के राज्य को इतिहासकारों ने सांस्कृतिक राज्य के रूप में संबोधित किया है। यह बात सही है कि इस राज्य में आज के अर्थवाली राष्ट्रीयता का अभाव था किंतु मुगल राज्य ने देश को एकता और अखंडता के सुत्र में पिरोए रखा। इस संदर्भ में मुगलकालीन शिक्षा नीति के सामाजिक प्रभाव को जानने हेतू तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रंथो का, सरकारी अहवालों का अध्ययन किया गया है।

२) उच्च शिक्षण –

मुगलकाल में उच्च शिक्षा के दो प्रकार थे , एक धर्मनिरपेक्ष शिक्षा थी इसमें अरबी व्याकरण, साहित्य, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, इतिहास, गणित, ज्योतिष भूगोल, कानून,चिकित्सा,कृषि आदि व्यवहारिक विषयों का अध्ययन किया जाता था। हिन्दू शिक्षा संस्थाओं में भी यह विषय प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से सिखाये जाते थे। दुसरी शिक्षा धार्मिकस्वरूप की होती थी इसमें धर्म व धार्मिक विषयों का अध्यापन कराया जाता था। इसका मुख्य उद्देश धर्म परिवर्तित मुसलमानों को इस्लाम से अवगत कराना था। पर धर्मसहिष्णु सम्राट अकबर ने इस व्यवस्था में परिवर्तन कर हिन्दू एवं मुसलमानों को समान रूपसे शिक्षा दी जाने की व्यवस्था प्रारंभ की थी। मुगल काल में धार्मिक शिक्षा में धर्म को प्राथमिकता दीए जाने से अन्य विषयों का समावेष सीमित मात्रा में होता

था। 'दार–ए–निजलिया' जैसी मुस्लिम शिक्षण संस्था में व्याकरण, अलंकारशास्त्र, हदीस तत्वज्ञान, न्यायशास्त्र, गणितशास्त्र जैसेविषय पढाये जाते थे। हिन्दुओं के संपर्क के पश्चात इस संस्था में नक्षत्रविज्ञान, चिकित्साविज्ञान भी पढाये जाने लगे । तथापि उच्च शिक्षा में पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा राजनिती, भूगोल जैसे विषयों को प्राथमिकता नही दी जाती थी। अत: लागों को भारत की भौगोलिक जानकारी भी नही होती थी अत: इस समय दुनिया का नक्शा देखना यह एक विस्मयकारी घटना मानी जाती थी।

मुगल काल में छात्रों की बुद्धिमत्ता मूल्यमापन करने के लिए कोई नियोजित परीक्षा पद्धती नही होती थी। अध्यापक ही विद्यार्थी को उसकी योग्यता को देखते हुए उसेअगली कक्षा में भेज देते थे। विद्यार्थीयों को उत्साहीत करने के लिए पुरस्कार भी दिये जाते थे। उच्चशिक्षा प्राप्त छात्रों को राजदरबार तथा कार्यालयों में उच्च पद प्रदान किये जाते थे तथा ऐसे छात्रों को 'अमामा' पगडी से सम्मानित किया जाता था। मुगलकाल में मदरसों में शिक्षा लने वाले छात्रों के लिए छात्रावास की व्यवस्था भी होती थी। अर्थात प्राथमिक शिक्षा के लिए छात्रावास की व्यवस्था उपलब्ध नही थी। छात्रावास में सभी सुविधाएँ होती थी जिसके लिए सरकार, धनी व्यक्ति अनुदान देते थे। मुगल काल में शिक्षा को बढावा मिलने के साथ उत्तम ग्रंथालयों का भी निर्माण किया गया। ग्रंथालय में ग्रंथपाल या सहाय्यक कर्मचारी हस्तलिखित पुस्तकों की देखभाल जतन से किया करते थे। इन ग्रंथालयों में ग्रंथो की नकल करने का कार्य भी किया जाता था। आज के समान आधुनिक तकनीक नही होने पर भी ग्रंथो का ज्ञान हस्तलेखन के माध्यमसे आगे बढाये जाता था।

फत्तेपुर सिक्री में अकबर के ग्रंथालय में २४००० ग्रंथ थे जिन्हे भाषा और विषय के अनुरूप व्यवस्थित लगाया गया था। ग्रंथपाल शेख फैजी के मार्गदर्शन में भाषांतर एवं प्रतियाँ बनाने का कार्य किया जाता था। इस समय व्यक्तिगत ग्रंथालय को प्रतिष्ठा का मापदण्ड माना जाने से संस्थानिक, सरदार तथा अमीर लोगों ने भी ग्रंथालयों का विकास किया था। अब्दुल रहीम खाना के ग्रंथालय में ९५ कर्मचारी नियुक्त थे। बहामनी वजीर मुहमूद गांवा के पास ३५००० तथा अकबर के ग्रंथालय का ग्रंथपाल शेख फैजी के व्यक्तिगत ग्रंथालय में ४६०० ग्रंथ थे। गुजरात के कुछ मदरसे अपने ग्रंथसंग्रह के लिये प्रसिद्ध थे जिनमें अहमदाबाद, काठियावाड के मदरसों में भिन्न विषयों के हजारों हस्तलिखित संग्रहित होते थे।

३) नारी शिक्षा :

सल्तनत काल की अपेक्षा मुगल काल में नारीशिक्षा की स्थिती समाधानकारक थी। मुगल काल में स्त्रियों के लिए पुरूषों के समान स्वतंत्र अथवा समानता की शिक्षा नीति प्रचलित नही थी। बालकों के समान बालिकाएँ मकतबों अथवा मदरसों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए नही जा सकती थी। बालिकाओं को मसजिद से संलग्न मकतब में भेजा जाता था।जहाँ उन्हे लिखने, पढने की साधारण शिक्षा प्रदान की जाती थी। उन्हे कुरान का अध्ययन कराया जाता था पर व्यवहरिक शिक्षा नारी के लिए जरुरी नही समझी जाती थी। अमीर परिवार में लडकियों की शिक्षा के लिए घरपरही अध्यापक को नियुक्त किया जाता था। राजकन्याओं, जमीनदारों की कन्याओं को लेखन वाचन कला अवगत होती थी अत: वे अपने रिश्तेदारों से पत्रव्यवहार करती थी। कुछ काव्यरचना भी करती थी पर ये सब व्यवस्था विवाह के पूर्व अपेक्षित थी। विवाह के पश्चात उनकी शिक्षा बंद हो जाती थी। गुलबदन बेगम, झैबुन्निसा, झीनतउन्नीसा के साहित्योंमें व्याकरण की कई त्रुटियाँ दिखाई देती है। मध्यमवर्गीय हिन्दू अथवा मुस्लीम स्त्री को केवल धार्मिक ग्रंथ के वाचन की सीमा तक ही शिक्षा प्रदान की जाती थी। निम्न स्तर की नारियों की शिक्षा की कोई व्यवस्था नही होती थी।

उचित शैक्षणिक व्यवस्था न होने पर भी मुगलकाल में उच्चवर्ग की कुछ विदुषी स्त्रियाँ कला व साहित्य में विशेष अनुराग रखती थी। नुरजहाँ, मीराबाई, जैबुन्निसा, गुलबदनबेगम, जहाँआरा,रूपमती, आकाबाई, कैनाबाई जैसी स्त्रियों ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी योग्यता सिद्ध की थी। पर जनसाधारण स्त्रियाँ घर पर रहकरही धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर सकती थी। इनके लिए स्वतंत्र पाठशाला, मदरसे प्रचलित नही थे। परदाप्रधान के सर्वमान्य प्रचलन के कारण नारी शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नही दिया गया था। नारी का कार्यक्षेत्र पुरूषों से सर्वथा भिन्न माने जाने के कारण उससे शिक्षा की अपेक्षा ही नही की गई। पर फिर भी संभ्रात परिवारों में संधी प्राप्त होने पर नारी शिक्षा के अधिकार को प्राप्त कर साहित्यीक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने में सहाय्यक सिद्ध हुई। हुमायु की भतीजी सलीमा सुल्तानाने अनेक कविताओं की रचना की, गुलबदन बेगम ने हुमायुननामा लिखकर अपनी साहित्यीक अभिरूची को प्रकट किया। अकबरने स्त्री शिक्षा के प्रसार हेतू फतेहपूरसीकरी में एक महिला मदरसे की स्थापना की थी। शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने एक महिला मदरसे की स्थापना की थी। शहाजहाँ की पुत्री जहाँआरा बेगम उच्चविदुषी थी, जिसकी कब्रपर खुदी हुई कविता उसकी बौद्धिक क्षमता की पुष्टी करती है। इस प्रकार सुल्तनतयुग में केवल रजिया सुल्ताना जैसी एक ही शिक्षित नारी का उदाहरण मिलता है पर मुगलयुग में विभिन्न प्रातों में कई विदुषी स्त्रियों के विवरण से प्रतीत होता है की, नारी शिक्षा का प्रचलन संपत्ती, पद–प्रतिष्ठा के अनुसार परिवार में निर्धारित होता था।

४) मुगल सम्राटों की शिक्षा नीति –

मुगल सम्राट बाबर एवं हुमायु के समय तक मुगल शासकों की शिक्षा नीति सल्तनतयुगीन शिक्षा का अनुकरण करनेवाली पारंपारिक नीति थी। जनसामान्य की शिक्षा नीति में विशेष परिवर्तन न होने पर भी ये दोनो सम्राट साहित्य में विशेषरूची होने से व्यक्तिगत रूपसे फारसी, अरेबिक, तुर्की भाषा के अच्छे जानकार थे। बाबर ने हुमायु के शिक्षा की उत्तम व्यवस्था की थी। बाबर ने अपनी पुत्रियों के लिये भी स्वतंत्र अध्यापकों की नियुक्ती की थी। पर इस समय अध्यापन की पद्धती जटिल, विघटित और संकीर्ण दिखाई देती है। अकबर ने स्वयं उच्च शिक्षा ग्रहण नही की थी, किन्तु उसे शिक्षा से अपार

लगाव था। इसी कारण अपने शासनकाल में शिक्षा की उन्नति के लिये निरंतर प्रयास अकबर द्वारा किये गये जिसके शासनकाल में विद्वानों को जागीरे प्रदान की गई व अनुदान दिये गये। अकबर के उदार धार्मिक विचारों का प्रभाव तत्कालीन शिक्षा पर भी पडा। 'आइने अकबरी' में अकबर की शिक्षा नीति के विषय में लिखा गया है– 'प्रत्येक छात्र को नैतिकता, गणित, कृषि, भूमिति, ज्योतिष, शरीरविज्ञान, इतिहास जैसे विषयों की पुस्तकों को पढना चाहिए।' परंपरागत शिक्षा के दोषो को दूर करने के लिए उसने आदेश जारी किये। उसने पाठशालाओं, मदरसों में पढाये जाने वाले विषयों को विस्तृत करने पर बल दिया। अकबरने मदरसों में हिन्दुओं को प्रवेश दिये जाने के भी आदेश दिये जिससे हिन्दू भी इस्लामी, फारसी की शिक्षा ग्रहण कर सके। अत: कहा जा सकता है कि अकबर का काल धर्मनिरपेक्ष शिक्षा का युग था।

जहाँगीर यथापि स्वयं शिक्षित एवं विद्वान था, किन्तु उसने जनसाधारण की शिक्षा के विकास के लिए बहुत अधिक प्रयत्न नही किए। मदरसों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए जहाँगीर ने कानून बनाया कि सन्तानविहीन व्यक्ति की मृत्युपर उसकी सम्पत्ति मदरसों को दान कर दी जाये। जहाँगीर एवं शहाजहाँ ने अनेक विद्वानों को आश्रय दिया तथा मदरसों का निर्माणभी कराया। शहाजहाँ का पुत्र दारा भी अत्यन्त विद्वान था इस कारण विलियम स्लीमन लिखते है की यदि शहाजहाँ के पश्चात दारा सम्राट बना होता तो शिक्षा की अत्याधिक उन्नति हुई होती। सम्राट अकबर के समय अध्यापन पद्धती में भी परिवर्तन किया गया जिसमें विद्यार्थी अध्यापक के बीच उचित तालमेल बनाये जाने पर बल देकर अक्षरज्ञान, शब्दार्थ, श्लोकार्थ एवं पूरनावृत्तीद्वारा कंठस्थ किये गए। अकबर की शिक्षा नीति को उसके उत्तरधिकारियों ने आगे बढाया पर औरंगजेब के समय शिक्षा के विकास का स्वरूप बदल गया। औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति के प्रभाव के फलस्वरूप उसने केवल मुसलमानों के शैक्षणिक विकास के ही प्रयास किये। मुसलमनों को उचित शिक्षा प्रदान करने के लिये उसने मकतबों एवं मदरसों के पाठ्यक्रम को अधिकव्यवहारिक बनाया पर हिन्दुओं के प्रति धार्मिक कट्टरता की नीति अपनाकर उसने हिन्दु मंदिरो एवं शिक्षण संस्थाओं को नष्ट करके मस्जीदो व मंदिरो का निर्माण कराया था। औरंगजेब के पश्चात उसके दुर्बल उत्तराधिकारी राजनितिक संगठन बनाये रखने में असफल सिद्ध हुये अत: तत्कालीन शिक्षा का विकास अवरूद्ध हो गया।

५) मुगलकाल में साहित्यिक उन्नति –

अकबर की व्यापक मानव निष्ठा का प्रभाव तत्कालीन समाज और साहित्य दोनो पर गहराई से पडा दिखाई देता है। उसका 'दीने इलाही' सिद्धान्त भी इसी कारण से धार्मिक कम सामाजिक सिद्धान्त ज्यादा बना है। अकबर ने अनेकता में एकता स्थापित करने के संदर्भ में अबुल पैजी द्वारा रामायण, महाभारत, वेदान्त का फारसी अनुवाद करवाया गया। अकबर ने हिन्दुत्व और इस्लाम दोनों की कट्टरता को त्याग कर दोनों संस्कृतियों मे समन्वय स्थापित करने का जो प्रयास किया, उसकी झलक रामकाव्य औरकृष्णकाव्य में देखी जा सकती है। मुगलकालीन इतिहास लेख में तारीखों के प्रयोगपर ज्यादा जोर दिया जाने लगा। इतिहास पर व्यक्तिगत विचारों और भावनाओं की छाप पडने लगी तथा घटनाओं के समकालीन विवरण पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा। बाबरनामा, तारीख – ए–रशीदी तारीख –ए –शाही, तारीख –ए– अकबरी, आईने अकबरी, तबकात– ए– अकबरी, तुजुक – ए – जहाँगीरी, पादशहानामा, आलमगीरनामा जैसे ग्रंथोसे तत्कालीन शिक्षा नीति की जानकारी मिलती है।

मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर स्वयंतुर्की एवं फारसी का बडा विद्वान था। उसने अपनी आत्मकथा तुजुक –ए– बाबरी लिखी जो तुर्की भाषा का उत्कृष्ट ग्रंथ है। बाबर ने एक नयी लिपि शैली का अविष्कार किया जो बाबरी लिपि कहलाई। हुमायु के समय लिखी गयी सबसे प्रसिद्धपुस्तक हप्त अक्लीस है जो खुदामीर की थी। अकबर के शासनकाल में फारसी एवं तुर्की साहित्य की सबसे अधिक उन्नती हुई। अबुल फजल के अनुसार अकबर के दरबार में ५८ श्रेष्ठ कवि थे जिसमें शेख फैजी को राजकवि का दर्जा प्रदान किया गया। अकबर ने एक अनुवाद विभाग की स्थापना की थी जो स्वयं उसकी ही देख रेख में काम करता था। हिन्दु मुस्लिम संस्कृति के समन्वय के लिये तथा देश के बुद्धिजीवियो के लिये साहित्यिक आदान प्रदान हेतु इस विभाग की स्थापना की गई थी। अकबर ने संस्कृत, अरबी, तुर्की औरयुनानी भाषा के ग्रंथो का फारसी में अनुवाद करवाया। अकबर के शासनकाल को हिन्दी कविता का स्वर्णयुग भी कहा जाता है। मलिक मोहम्मद जायसी की पदमावत, संत तुलसीदास की रामचरितमानस, सुरदास की सुरसागर जैसी साहित्यिक संपदाओं के साथ अकबर केदरबार में बीरबल को कविराय की उपाधि से विभूषित किया गया। अकबर ने हिन्दी के साथ संस्कृत को भी राज्याश्रय प्रदान किया। जहाँगीर भी उच्च कोटी का विद्वान एवं समालोचक था, उसने तुजुक– ए–जहाँगिरी नामक आत्मकथा फारसी में लिखी। जहाँगीर एवं शाहजहाँ ने भी विद्वानों को आश्रय देकर अपने पूर्वजो की परंपरा को स्थिर रखा। उन्होंने अपने दरबार में संस्कृत तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के विद्वानों का यथोचित आदर सत्कार किया।

औरंगजेब एक उच्च शिक्षा प्राप्त मुसलमान था जो धर्मशास्त्र एवं न्यायशास्त्र का ज्ञाता था। कविता एवं इतिहास लेखन में उसकी रुचि नही थी। फिर भी पूर्व प्रचलित परंपरा के कारण उसके समय अनेक फारसी ग्रंथो की रचना हुई। पर उसने हिन्दी, संस्कृत साहित्य के प्रतिकोई लगाव नही दिखाया। अत: राजाश्रयके अभाव में प्रादेशिक भाषा का साहित्य, संस्कृत अथवा हिंदी साहित्य का विकास अवरूद्ध हो गया ।

मुल्यमापन –

मुगलकाल को धर्म का युग कहना शायद अनुचित नही होगा लेकिन वास्तवमे मुगल बादशाहोंने धर्म के अंकुश को राजसत्ता परहावी नही होने दिया.

१)मुगलकालीन मुस्लिम एवं हिन्दू शिक्षण संस्थाओं

द्वारा ज्ञानदान की प्रक्रिया निरंतररूप से जारी रही। आज के समान शिक्षा को प्रबल व्यक्तीत्व का उत्तरदायित्व नही दिया गया पर फिर भी शिक्षा के विकासके लिये शासकों द्वारा नियंत्रित रूपसे प्रयास किये गये, जिसमें धनिक, उच्चवर्ग के लोगों की भी सहायता मिलती रही। इस कारण शिक्षा तथा साहित्य का विकास क्रमबद्ध रूप से होता रहा। स्वयंमुगल बादशहा साहित्य तथा इतिहास लेखन में बहुत ज्यादा रूचि लेते थे– बाबरनामा, तुजुके जहाँगीरी इसके प्रमाण है।

मुगलकाल में हिन्दू एवं मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में धार्मिक शिक्षा को अत्याधिक महत्त्व दिया गया जिस के कारण व्यवहारिक, व्यवसायिक शिक्षा की प्रगती नही हो सकी। अत: इसका प्रभाव सामाजिक विकास पर भी दिखाई दिया क्यों कि शिक्षा ही पीढीदर पीढी सामाजिक चेतना,विकास के क्रम को बनाये रख सकती है। धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य रूप दिये जाने से अभ्यासक्रम का स्वरूप संकुचित हो गया। इस दौर की आर्थिक और राजकिनितक स्थिरता ने भी साहित्य के विकास की खास भूमिका निभाई। अकबरनामा,पादशहानामा, आलमगीरनामा मुगल सरकारी इतिहास की बेहतरीन मिसाले है।

२)इतिहास लेखन इस्लाम की शानदार धरोहर रही है। मुगल बादशहोंने अपना इतिहास लिखवाने के लिए उस जमाने के मशहुर इतिहासकारों तथा लेखकों को नियुक्त किया जिनकी पहुच तमाम सरकारी कागजातों तक थी। उनको इतिहास लिखते समय हर प्रकार की सहुलियत दी जाती थी। ऐसी किताबों से लोगों की इतिहास में रूची बढी। इसके अलावा गैरसरकारी इतिहासकार भी थे जिनका काम आलोचना के साथ इतिहास की सेवा करना भी होता था। निजामुद्दीन अहमदकी तबकार ए अकबरी इसी तरह की एक कोशिश है। इस समय कागज की गुणवत्ता तथा जिल्द बांधने के तरीकों में सुधार हुआ जिससे इन रिकार्डो को सुरक्षित रखने में सहायता मिली, इसी वजह से मुगलकालीन ऐतिहासिक स्त्रोत विशाल मात्र में प्राप्त होते है। अकबर तथा उसके उत्तराधिकारी भी भारतीय साहित्य केसंरक्षक बने। मुगलकालीन शिक्षा के सांस्कृतिक प्रभाव के संदर्भ में यह सिद्ध किया जा सकता है कि हिन्दु मुस्लीम एकता के बीज अच्छी तरह से पनप चुके थे। सामाजिक विकास के इस दौर में कला, धर्म, राजनीति, दर्शन तथा साहित्य को शिक्षा क्षेत्रसे जुडने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ।

मुगलकालीन शिक्षा पद्धती के कारण फारसी भाषा के प्रसार के साथही यहाँ की क्षेत्रीय भाषाओं जैसे पंजाबी, कश्मीरी, सिंधी, बंगला तथा फारसी के बीच आदान प्रदान होने लगा । पंजाबी पर फारसी भाषा का असर गुरूनानक के कथनों में देखा जा सकता है। पर इस समय हिन्दू समाज में शिक्षा के अधिकारों को विशिष्ट वर्ग तक सीमित किये जाने से सामाजिक विषमता का विकास हुआ था। स्त्रीपुरूष समानताकी विचार दारा को मुगलकालीन शिक्षापद्धती में स्थान नही मिलसका।

मुगलकाल में शैक्षणिक केंद्र के रूप में मंदिर, मस्जिद जैसे धार्मिक संस्थाओं का विकास हुआ जिनपर सामान्य जनता विश्वास करती थी। परंतु इनके माध्यम सेदी जानेवाली शिक्षा को सर्वव्यापी, प्रासंगिक बनाने का प्रयास अकबर को छोडकर अन्य किसी भी मुगल सम्राट द्वारा नही किया गया। अबुल फजल अकबर के दरबार के ३६ प्रमुख संगीतकारों की तालिका देता है। जिसमें हिन्दु– मुस्लीम दोनों सम्मेलित है। अकबर ने संस्कृत एवंप्रांतीय भाषाओं को भी प्रोत्साहन दिया जिसमें भारतीय संस्कृ ती में एक समृद्ध विविधता का समावेश हुआ.

सामाजिक रूपसे शिक्षा के क्षेत्र में जनता की सहभागिता का प्रमाण नगण्य होने पर भी तत्कालीन शासनकों के द्वारा साहित्य के जतन, वृद्धि के लिये किये गये प्रथाओं से साहित्यिक संपदा में अभिवृद्धी हुई। मुस्लीम शासकों द्वारा धार्मिक असिहष्णुता की नीति का स्वीकार किये जाने पर भी विभिन्न भाषाओं में साहित्यका निर्माण कर विद्वानों को आश्रय देकर उन्होने साहित्यिक विरासत को कायम रखा। इसी कारण मुगलकालीन इतिहास अध्ययन में इस समयके लिखे गये ग्रंथ, विदेशी यात्रियों के विवरण दरबारी कवियोंकी कवितालेखन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

३)हिन्दु मुसलमानों की एक गंगा जमनी संस्कृती कीदिशा में पहला कदम अकबर द्वारा उठाया गया। अकबर के सामाजिक दृष्टिकोण ने भारत में मिली जुली संस्कृती के विकास को बढावा मिला। अटरावी रातो में मुगल सत्ताके पतनोन्मुख हो जाने परभी इस मिली जुली संस्कृती का विकास नही रूका। मुगल कालीन शिक्षा व्यवस्था में लोकसंस्कृती एवं सामाजिक व्यवहारके क्षेत्र में हिन्दु मुसलमानों के बीच विस्तृत और स्थायी आदान प्रदान संभव हो सका। मुगलकाल में हिन्दुओं को मुगल दरबार में सम्मान तथा उच्च पद प्राप्त होने लगे थे। अब राम–रहीम, रामायण और कुरान ही पास नही आये बल्कि हिन्दु – मुसलमान रहनसहन, वेशभूषा, आचार विचार भी पास आ गये थे। हिन्दी का मध्ययुगीन सुफी काव्य इस तथ्यकी पुष्टी करता है। स्वयं जहाँगीर तथा शहाजहाँ ने अकबर की नीतियों का बहुत दूरतक पाठन किया बाद में दाराशिकोह के पतन से सांस्कृतिक विरासत की अमृतधारा को बडा धक्का लगा और औरंगजेब की कट्टरता ने सामाजिक सांस्कृ तिक स्तर पर देश का बडा नुकसान किया।

सहाय्यक संदर्भ ग्रंथ –

१) चिटणीस कृ.ना., मध्ययुगीन भारतीय संकल्पना व संस्था, पुणे १९८२
२) जाफर एस.एम., सम कल्चरल ॲसपेक्टस ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया,
पेशावर, १९३९.
३) रशिद ए., सोसायटी ॲन्ड कल्चर इन मिडविव्हेल इंडिया, कलकत्ता, १९६९.
४) श्रीवास्तव ए. मिडविव्हेल इंडियन कल्चर, आगरा, १९६४
५) चिटणीसके. एन., सोशियो एकानामिक ॲसपेक्टस ऑफ मिडव्हेल बेल इंडिया, पूणे १९७४
६) ताराचंद इनफ्ल्यून्स ऑफ इस्लाम ऑन इंडियन कल्चर, अलाहाबाद, १९४६.
७) हुसैन युसुफ, गिम्पलेसेस ऑफ मिडविव्हेल इंडियन कल्चर, बांम्बे१९५९.
८) इरफान हबीब, दि ॲटलस ऑफ दि मुघल एम्पायर.
९) चौधरी एम.एल., दि. स्टेट ॲन्ड रिलीजन इन मुगल इंडिया, कलकत्ता १९५१
१०) वर्मा एच., मध्यकालीन भारत, आगर, दिल्ली विश्वविद्यालय,१९९९